SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृति का व्यावसायिक संतुष्टि के संदर्भ में अध्ययन

योगेश्वरी केशरी, एम. एड. शोधार्थी, **अर्चना वर्मा,** Ph. D.,
शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
योगेश्वरी केशरी, एम. एड. शोधार्थी
अर्चना वर्मा, Ph. D.
E-mail : sapnakesharius4@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 27/09/2024
Revised on : 29/11/2024
Accepted on : 09/12/2024
Overall Similarity : 01% on 30/11/2024

शोध सार

"A teacher can never truly teach unless he is still learning himself. A lamp can never light another lamp unless it continues to burn its own flame."

Ravindranath Tagore

शिक्षण के प्रति अरूचि है तो स्वभावतः उसकी शिक्षण दक्षता भी प्रतिकूल होगी और वह विद्यार्थियों में भी शिक्षा के प्रति अरूचि उत्पन्न करने में सहायक होगी। शिक्षकों की योग्यता. उनकी कार्यशैली, उनकी लगन, आस्था एवं विश्वास आदि पर ही शिक्षण व्यवसाय की सफलता एवं असफलता निर्भर करती है। वर्तमान समय में शैक्षिक स्तर में गिरावट आ रही है, इसका प्रबलतम एवं प्रभावीकारक शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि में अधिन्यूनता ही है। अभिवृत्ति किसी घटना के प्रति व्यक्ति की आंतरिक अनुभूति है। अभिवृत्ति मनुष्य के भावी व्यवहार, तर्क एवं कल्पना को प्रभावित करती है। अभिवृत्ति में अनेक विशिष्ट गुण होते है जो कि व्यक्ति के अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर आधारित होते हैं। व्यावहारिक दृष्टि से शिक्षकों के लिए अभिवृत्तियों का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। धनात्मक अनुकूल अभिवृत्तियाँ कार्यों को केवल सरल ही नहीं बनाती बल्कि संतोषप्रद एवं पुरस्कार योग्य बताई जा रही है। ऋणात्मक प्रतिकूल अभिवृत्तियाँ शिक्षण प्रक्रिया को बहुत थका देने वाली व दुखद बना देती हैं। शिक्षा का स्तर शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं अपने कार्य के प्रति संतोष की भावना पर आधारित होता है। प्रस्तुत शोध में चयनित समस्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनकी व्यावसायिक संतुष्टि के संदर्भ में अध्ययन है। इस अध्ययन में कबीरधाम जिले के 120 शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों का चयन न्यादर्श के लिये किया गया है। संपूर्ण प्रतिष्ठान हेतु उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श प्रणाली का उपयोग किया गया है। समस्या समाधान हेतु शैक्षिक अभिवृत्ति मापन हेतु डॉ. एस.पी.

अहलूवालिया द्वारा निर्मित अभिवृत्ति मापनी एवं व्यावसायिक संतुष्टि मापन हेतु डॉ. प्रमोदकुमार एवं डी. एन. मूथाद्वारा निर्मित व्यावसायिक संतुष्टि मापनी का उपयोग किया है। शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया एवं शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

मुख्य शब्द

शैक्षिक अभिवृत्ति, व्यावसायिक संतुष्टि.

भूमिका

शिक्षा मनुष्य को सांसारिक जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाती है। बालक जन्म के समय असामाजिक एवं असहाय होता है, उसे सामाजिक और सांस्कृतिक मानव बनाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृतियों का शोधन और मार्गन्तरीकरण करके उसे समाज करके एक सक्रिय नागरिक बनाती है, जिससे वह अपने उत्तरदायियों का निर्वहन सफलतापूर्वक कर सके। ऐसी शिक्षा हमें अच्छे कुशल से प्राप्त होती है। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) ''शिक्षा राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक विकास का शक्तिशाली साधन है, शिक्षा राष्ट्रीय सम्पन्नता एवं राष्ट्र कल्याण की कुंजी है।''

अतः मुख्य रूप से ऐसी शिक्षा वही शिक्षक प्रदान कर सकता है ,जो अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट हो, जिसकी शिक्षण प्रभावकता उच्च स्तर की हो।

एकमप्यक्षरं यस्तु गुरुः शिष्ये निवेदयेत् ।
पृथिव्यां नास्ति तद् द्रव्यं यद्दत्वा ह्यनृणी भवेत ।
.....मनु स्मृति ।। 6।।

वर्तमान समय में कुछ युवा बेरोजगारी भत्ता तथा अन्य विकल्प ना मिलने पर विवश होकर अध्यापन कार्य करने लगे हैं। विवशतावश शिक्षक बन जाने पर भी उनके सामने कुछ ऐसे कारक उत्पन्न हो जाते है,जिससे उसकी शिक्षण प्रभावशीलता प्रभावित होती है। उनकी योग्यतानुसार उचित पद सेवा सुरक्षा प्रबंध वेतन कार्य, दशाए, प्राप्त साधन सुविधाएं वातावरण संगठन का अभाव, सहयोगियों, प्रधानाचार्य प्रबंधको के साथ उचित मानवीय संबंधों के अभाव आदि के कारण शिक्षक कुंठित रहते हैं। परिणामस्वरूप वह अपने शिक्षण कार्य के साथ चाहकर भी न्याय नहीं कर पाते हैं।

अतः उचित पर्यावरण सहयोगात्मक व्यवहार न मिलने से शिक्षकों में अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। ऐसी स्थितियों में शिक्षक प्रभावपूर्ण शिक्षण कराने में सक्षम नहीं हो पाते हैं। वे अपने कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व का पालन इसी प्रकार चिह्नित कर सकेंगे ,साथ ही शिक्षक विद्यार्थियों को उनके परिवार समाज व देश के प्रति दायित्वों की जानकारी प्रदान करने में सक्षम नहीं हो सकेंगे, जिसका प्रभाव पूरे शिक्षण एवं राष्ट्र पर पड़ता है इसलिए एक कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षा के लिए व्यवसाय के प्रति संतुष्ट होना अति आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति ज्ञात करना।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यस्त शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों व्यावसायिक संतुष्टि ज्ञात करना।
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना करना।

परिकल्पनाएं

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नही पाया जाएगा ।

2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

शोध का परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए कबीरधाम जिले के कवर्धा विकासखंड के शासकीय विद्यालय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है । इन विद्यालयों से 120 महिला शिक्षक एवं पुरूष शिक्षकों का चयन किया गया है ।

क्षेत्र	पुरूष शिक्षकों की संख्या	महिला शिक्षकों की संख्या	योग
शासकीय विद्यालय	30	30	60
अशासकीय विद्यालय	30	30	60
योग	60	60	120

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

चरों का विवरण

1. स्वतंत्र चर – शैक्षिक अभिवृत्ति।
2. आश्रित चर – व्यावसायिक संतुष्टि।

उपकरण

1. शिक्षण अभिवृत्ति मापनीः डॉ. एस. पी. अहलूवालिया।
2. व्यावसायिक संतुष्टि प्रश्नावलीः डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी एस मूथाबंब।

सांख्यिकी विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता मान t की गणना की गई।

1. मध्यमान $M = A.M. + \frac{\Sigma fd}{N} \times i$
2. मानक विचलन $S.D. = i \times \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$
3. $t = \frac{m_1 \sim m_2}{\delta_E}$

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं प्रमाण

H_{01} उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

क्षेत्र	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थक अंतर
शासकीय विद्यालय	60	233.5	25.88	1.04
अशासकीय विद्यालय	60	227.0	22.02	
योग	120			

*(**स्त्रोतः** प्राथमिक समंक)*

गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 1.04 है। यह मान 1 प्रतिशत एवं 5 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.58 एवं 1.96 से कम है। अतः शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

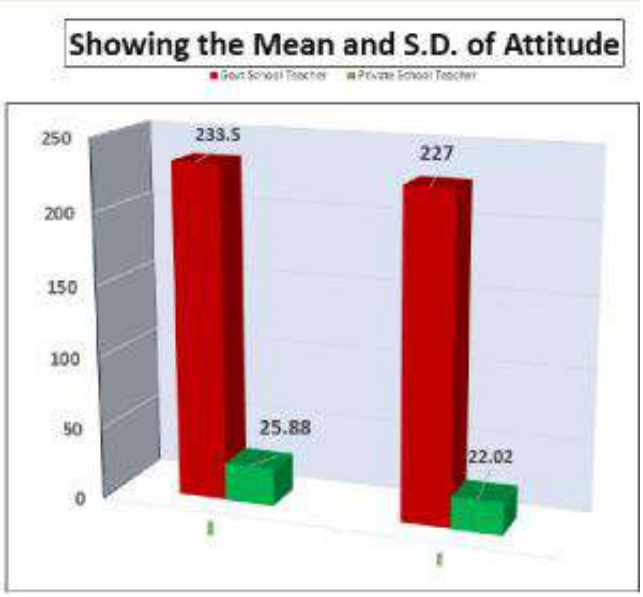

H_{02} उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अंतर नही पाया जाएगा।

क्षेत्र	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थक अंतर
शासकीय विद्यालय	60	19.3	4.29	2.26
अशासकीय विद्यालय	60	16.9	3.98	
योग	120			

*(**स्त्रोतः** प्राथमिक समंक)*

व्याख्या

गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 2.26 है जो कि 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.58 से कम है। किन्तु 5 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 से अधिक है. अतः शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

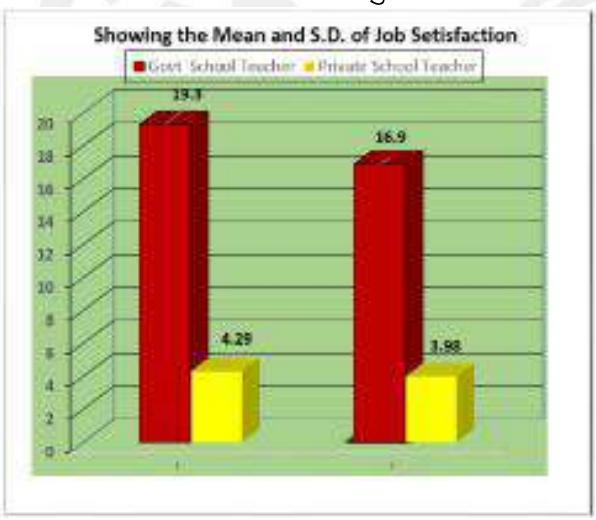

शासकीय एवं अशासकीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में अन्तर के कारणः

1. शासकीय और अशासकीय शिक्षकों की सेवा शर्तों में समानता नहीं हैं।
2. शासकीय सेवा में शिक्षक की सेवाएँ सुरक्षित होती हैं, जबकि अशासकीय सेवा में सेवाएँ अस्थायी होने से अशासकीय शिक्षक चिंतित रहते हैं।

3. शासकीय सेवा में सेवानिवृत्ति पश्चात् पेंशन की सुविधा है, जबकि अशासकीय सेवा में कार्यरत शिक्षक भविष्य के लिए चिंतित रहता है।
4. अशासकीय सेवा में पदोन्नति के अवसर बहुत कम हैं, जबकि शासकीय सेवा में पदोन्नति के अवसर हैं।

सुझाव

- शिक्षा के निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शैक्षिक आवश्यकताओं का आंकलन होना चाहिए तथा उसी के अनुरूप अध्यापकों को सुविधा एवं सम्मान मिलना चाहिए। इस तथ्य को मान्य किया जावे कि शिक्षा के महान उद्देश्यों की प्राप्ति में सबसे प्रधान तथ्य यह है, कि अध्यापक का उचित सम्मान हो तथा उन्हें आवश्यक सुविधाएँ प्रदान की जाए।
- सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण की गुणात्मकता को पर्याप्त रूप से प्रोन्नत किया जाए और व्यावहारिक कार्य एवं अंतरण शिक्षा अवधि को महत्व दिया जाए।
- केन्द्र सरकार शिक्षकों के लिए एक राष्ट्रीय वेतनमान नीति का निर्माण कर सभी प्रकार और स्तर के शिक्षकों के लिए उसे लागू करें।
- महँगाई, क्षतिपूर्ति, आवास और अन्य भत्ते सभी शिक्षकों को दिए जायें तथा समय–समय पर वेतन वृद्धि जीवन स्तर के मूल्यों पर आधारित होती रहे जिसका निरूपण वैज्ञानिक विधि से किया जाए।
- अध्यापकों के संगठनों को प्रभावशाली एवं सशक्त संस्था मानना चाहिए जो शिक्षा के विकास में पूर्ण सहयोग देते हैं इसलिए उन्हें शिक्षा नीति के निर्धारण में सक्रिय रूप से सम्बद्ध किया जाना चाहिए।
- अध्यापन एक सुसंगठित व्यवसाय एवं जनसेवा है जिसमें अध्यापकों में ठोस ज्ञान विशेष कौशल आवश्यक है तथा उनके सतत् विकास के लिए अध्ययन की सुविधा होनी चाहिए।
- शिक्षक का व्यवसाय अध्ययन और चिंतन का व्यवसाय है। अतः शिक्षकीय व्यवसाय की दक्षता बढ़ाने के लिए अध्ययन और चिंतन पर अधिक बल दिया जाना चाहिए।
- शिक्षकों के चयन एवं नियुक्ति की पद्धतियाँ इस प्रकार नियोजित की जाए, कि जिससे प्रतिभावान तथा इस व्यवसाय के प्रति अभिरूचि रखने वाले व्यक्ति प्रवेश पा सकें।

संदर्भ सूची

1. Bhatti, K., & Qureshi, T. (2007). Impact of employee participation on job satisfaction, employee commitment and. employee productivity. *International Review of Business Research,* Vol. 3(2): 54-68.
2. कपूर मोनिका (2012) माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शासकीय विद्यालय के संदर्भ में एजुसर्च, एजुसर्च, वाल्यूम 03, 01 अप्रेल 2012, पृ. 134–136।
3. मंगल एस के (2012) *शिक्षा मनोविज्ञान,* पी एच आई लर्निंग, नई दिल्ली, पृ. 275।
4. कचना, देगी और शर्मा, सुरेंद्र कुमार (2017) शिक्षण अभिरुचि और भागी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण पेशे के प्रति उनके लिंग, संस्थान के प्रकार और अध्ययन की धारा के संबंध में दृष्टिकोण का एक अध्ययन, *एप्लाइड रिसर्च के इंटरनेशनल जर्नल,* 3(8), 668–673।
5. मुखर्जी, मीता (2005) बिलासपूर जिले के पूर्व माध्यमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं कक्षा अध्यापन में जनतांत्रिक अभिवृत्ति का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध।
6. पार, हरे कृष्ण और बेजोग, कुम्बा (2019) टीचिंग एप्टीट्यूड ऑफ बी.एड स्टूडेंट टीचर्स ऑफ द इंस्टीटयूट

ऑफ एडवांस्ड स्टडीज इन एजुकेशन एंड कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन इन ओडिशा, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज,* 9(2), 423–437।

7. भण्डारी, रविन्द्र कुमार एवं पाटिल, एन.एच. (2009) महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन, एजुट्रक, वाल्यूम 08, 11.07.2009, पृ. 42–44।

8. जमाल साजिद (2012) माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं नैतिकता पर संगठनात्मक, स्टाफ एजुकेशनल डेवलपमेंट इंटरनेशनल, वाल्यूम 1 मई 2012, पृ. 23–26।

9. पटनायक, एस.पी. और शर्मा, बी. के. (2007), प्राथमिक विद्यालयों के सांगठनिक स्वास्थ्य और शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन, *जर्नल ऑफ टीचर एजूकेशन एंड रिसर्थ,* नोएडा 2 (2) दिसम्बर 2007 पृ. 59–66।

10. शर्मा, कविता (2017) सेवास्त, शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक सन्तुष्टि के सन्दर्भ में उनके विद्यार्थियों शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजूकेशन एंड सांइस रिसर्च,* वाल्यूम 04, अगस्त 2017, पृ. 52–57।

11. सुनील कुमार व नितिन कुमार वर्मा (2015), कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्ववित्त एवं अनुदान प्राप्त शिक्षक–शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मेनेजमेंट सांइस एंड टेक्नालाजी,* वाल्यूम 06,पृ. 68–75।

12. कावरे, सुधीर सुदाम (2018) उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य कक्षीय वातावरण से कार्यसंतुष्टि का अध्ययन, *Review of Research,* वाल्यूम संख्या 07 अगस्त 2018, पृ. 1–5।

13. नवोदय विद्यालय (2012) प्रतिबद्धता का प्रभाव, *स्टाफ एण्ड एज्युकेशनल डेवलपमेंट इंटरनेशनल,* वाल्यूम 16, 01 मई 2012, पृ. 23–36।

14. गौड, शोभा, विश्वकर्मा, ऋषिकेश (2016) गोरखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि एवं प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च थाट्स,* वाल्यूम 10, मई 2016, पृ. 223–227।

****